

विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय
वर्ग अष्टम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह
ता:-07-03-2021 (एन.सीई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ: नवमः पाठनाम सत्सङ्गतिः

पाठ्यांशः-

पुत्रः- किं मनुष्येषु संसर्गस्यापि प्रभावः भवति ?

माता – आम् यः यादृशेन पुरुषेण सह संगतिः करोति यादृशेन पुरुषेण सह तिष्ठति , उपविशति , खादति , आलाप- संलापौ च कुरुते तस्य तादृशः एव स्वभावो भवति । यदि सज्जनैः सह संगति भविष्यति तर्हि दुर्जनता अपगमिष्यति ।

पुत्रः- मातः! सत्यम् अतएव नीतिकराः कथयन्ति 'संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति'।

शब्दार्थाः

संसर्गस्यापि – साथ में रहने का , यादृशेन – जैसे , आम् – हां
उपविशति – बैठता है , आलाप- संलापौ – बातचीत , तर्हि -तो
तादृशः - वैसा , अपगमिष्यति – चला जाएगा

संसर्गजा - किसी के साथ में रहने से उत्पन्न होने वाला

अर्थ –

पुत्रः-क्या मनुष्यों पर संगति का भी प्रभाव पड़ता है?

माता- हां जो जिस पुरुष की संगति करता है जैसे पुरुष के रहता है, बैठता है, खाता है और बातचीत करता है। उसका वैसा ही स्वभाव होता है। यदि सज्जनों के साथ संगति होगी ।

पुत्र -मा। सच में अतः नीतिकार कहते हैं संगति से ही दोष-

गुण उत्पन्न होते हैं।